उत्साह प्रदान करने वाला सर्वेक्षण चक्र !

लूका 15, 11-32

क्र.	आत्मिक कार्य	प्रमाणित प्रक्रिया	आत्मिक कमरा	चक्र में शिकार अपराधी	इस चक्र में युद्ध करना	परमेश्वर का चरित्र
1	प्रकाशन और दोषारोपण	परमेश्वर का वचन, परमेश्वर स्वप्न, दशन, विवेक और बातचीत।	परमेश्वर की आदालत में।	हर अपराधी को परमेश्वर के सामने दोष लगाना।	स्वंय का अवलोकन अपराधी को पश्चाताप की ओर ले जाएँ।	परमेश्वर दयालु है।
2	पश्चाताप	परमेश्वर की दया पश्चाताप की ओर ले जाती है यह पवित्रात्मा हमें कायल करता है, क्योंकि वह यीशु के लहु की सामर्थ को जानता है।	गोलगथा क्रूस के सामने।	हर एक व्यक्ति जो स्थिर हो गया है, वह दोष पूर्ण होता है, गलत कारणों के कारण और पाप की शुरूवात से उस बाहर निकलना है।	अपनी गलती के लिये जिम्मेदारी लेना है, अपने आप को परमेश्वर के सामने दोषी मान लो, यीशु को क्रूसित देखो, अपने बुरे विचारों और नकारात्मक नतिजों को कबूलों।	परमेश्वर धर्मी है।
3	क्षमा पाना	परमेश्वर के प्रेम उसी की दया और क्षमा करने की सामर्थ को पहिचाने।	पुनुरूत्थान यरूशलेम में। यूहन्ना 20	जानबूझकर क्षमा मागंना, क्षमा गृहण करना और स्वंय को क्षमा करना, दूसरे दोषी को क्षमा करना , हर एक बन्धन और श्राप को तोड़ना। दुष्टात्माओं को भगाना जो हमारे पापों के कारण आ बैठे है। जहा कहीं भी बिमारी है, वहां चंगाई ग्रहण करों और पवित्र आत्मा से भर जाओ।	जो दोषी है उन से क्षमा मांगे। अन्दरूनी चंगाई अभ्यास करों। हर एक दुष्टात्मा को यीशु के नाम से जो पाप से जुड़ी है भगाओ। पूर्ण चंगाई ग्रहण करों, पवित्रात्मा से भरे रहो।	परमेश्वर क्षमा करने हारा है।
4	मेल मिलाप करने वाला	परमेश्वर और पड़ोसियों से शान्ति की चाह रखो। नवीनिकरण की चाह करो और गहरे रिश्ते की चाह करो।	मेल मिलाप की टेबिल तीबरियत यूहन्न 21	दोषी को पवित्रात्मा की अगुवाई से मेलमिलाप की टेबिल में आमन्त्रित करें। परमेश्वर के कार्य को जो दोषी है उस के अन्दर कैसे काम कर रहा है। परमेश्वर की क्षमा की घोषणा करो और उसे आशिषित करो, उस में नया बिश्वास उत्साहित करो। परमेश्वर की वाचा को याद दिलाकर उनके बीच में कैसे कार्य कर रहा है।	दोषी को मेलमिलाप की टेबिल पर आमन्त्रित करो, जो परिर्वतन परमेश्वर कर रहा है। वर्णन करो (उपरोक्त 1,2 में) फिर से वह वाचा जो परमेश्वर ने अपने लोगों से की याद दिलाओ।	वाचा का परमेश्वर
5	क्षति पूर्ति	पवित्रात्मा को और आगे करो, जो विजय दिलाता है, अपने पूर्वजो को जो जीवित हैं, उन्हें सम्मान दो, यह जानते हूए की सच्चाई को प्रकट करने में सामर्थी हैं।	आत्मा के द्वारा जीवित रहो। प्रे. काम 2	नये विचारधारा के द्वारा नई व्यावहारिकता को अभ्यास करो। हीन भावना से दूर रहो। उन आदतो को जो शरीर पर चलती है जैसे गन्दी आदते से दूर रहो। पवित्रात्मा के द्वारा चलों जो अभी भी अलग नही हूए है उनके साथ अच्छा व्यवहार करो, अगले वंश के या जो प्रभु आप को दिखाता है।	नये विचारधारा और नई व्यवहारिकता को जो अभी भी दबे हुए है, उनके साथ भलाई करो जो अभी भी फंसे हुए है या अगले वशंज के साथ समूह जो परमेश्वर दिखाता है।	ज्योति का पिता जो अच्छे वरदान देता है।
6	पुनः सीपन	परमेश्वर की अगुवाई और अभिषेक	पिता का घर। प्रे. काम 3:21;प्र.वा. 22	अपनी बुलाहट फिर से लो या पहिली बार उसमें प्रवेश करो को दिखाता है।	अपनी बूलाहट फिर से ले लो या पहिली बार उस में प्रवेश करो, सम्मान दुबारा स्थापित करो।	सच्चा परमेश्वर।
7	परमेश्वर से डरो, नई पिता के साथ नई संगती	परमेश्वर की आदभुत उपस्थिति	पिता के घर की दावत।	पिता से मिलने था आनन्द, उत्सव मनाओं परमेश्वर से डरना सिखो, आश्चर्य काम को अनुभव करो।	पिता से मिलने की खुशी और उत्सव मनाओं परमेश्वर से और डरना सिखो और आश्चर्य काम को अनुभव करो।	परमेश्वर प्रेम है।

छोटी निर्देशिका :

परमेश्वर के प्रकाशन के द्वारा रास्ता खुलता है। हमें यह पता चलता है कि हम कहां शिकार बन जाते हैं और कहा हम दूसरो को क्रुद्र करते है।

(1) प्रत्येक पाप परमेश्वर के विरूध और अपने स्वंय के ऊपर होता है आर उसका असर हमारे पड़ोसी पर पड़ता है। (2) यीशु पर पहिले दोषारोपण किया फिर क्रूस का दण्ड दिया। हम अपने पापों के द्वारा यीशू को क्रूसित करते है। जब हम पश्चाताप करते हे जब हम कबूल करते हैं कि हम दोषी है। हमें अपने पाप का परिणाम करते हे। यह हमें गहिरे पश्चाताप परमेश्वर के सामने करते है, बाद में उन लोगो के साथ जिन से हमारा सम्बन्ध है। (3) तब हमें सच्ची गहरी क्षमा का अनुभव होता है यह यीशु के लहू से मिलता है। तब हम सब हर परिस्थिति में जो हमें शिकार बनाती है और जानते हुए क्षमा ग्रहण करते है। जब हम सभी को क्षमा करते है जिन्होंने हमारे विरूद्ध में पाप किया है। दोषी अब स्वंय है और उसका अधिकार रहता है कि उस व्यक्ति से क्षमा मांगे। हम अन्दरूनी चंगाई अपने दर्द और दुःख मिलता है। हम दुष्टात्माओं को भगााते है और शारिरिक चंगाई प्राप्त करते है। (4) क्षमा के उपरान्त मेल मिलाप होता है। अब हमारा मेलमिलाप परमेश्वर से हो गया है और हमारें पिछले जीवन से और पड़ौसी है। (5) मेल मिलाप के बाद हमें पापों से छुटकारा मिल जाता है। पुराने जीवन शैली पीछे छोड़ दी, नई जीवन शैली आरम्भ थी और उस पर चेला अब हम अश्चर्य जनक जीवन का अनुभव करतें है। (6) अब यह रास्ता पुनवीसन और पनुः सीपन की ओर ले चलता है। यह हमारे जीवन की बुलाहट से सम्बन्ध रखता है और जो सम्मान और प्रशंसा हमें नही मिला था वह मिलता है, यह रास्ता हमेशा पिता के घर से चलता है। (7) हम परमेश्वर के सामने एक नये आदरयुक्त भय, डर और गहरे प्रेम से हम उसकी आराधना करते हे। नये प्रकाशन हमें नये और परिक्रमा में ले चलते है।

नवीनीकरण का चक्र

लूका 15:11-32

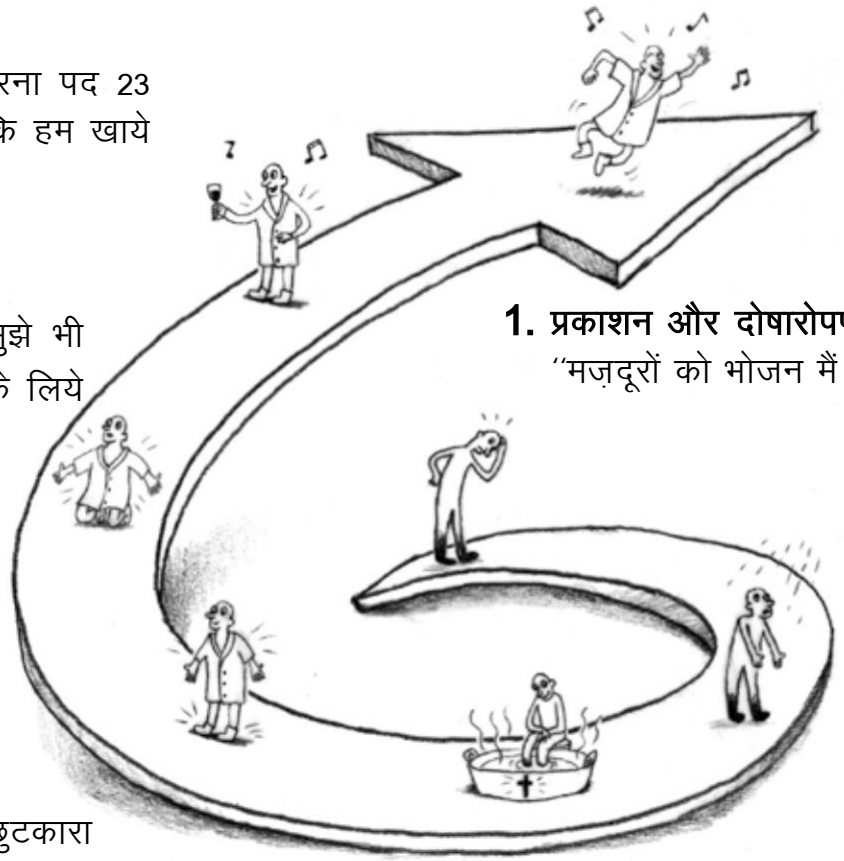

1. प्रकाशन और दोषारोपण
''मज़दूरों को भोजन मैं यहां भूखा मर रहा हूँ।''

2. पश्चाताप
आप ''दूसरे लोगों के लियें ''मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टी में पाप किया है।''

3. क्षमा ''स्वंय अंगीकार, बोलना और क्षमा ग्रहण करना, पिता से उसे देखकर तरस खाया और दौड़कर उसे गले लगाया और चूमा।''

4. समाधान ''स्वीकार करना या ठहराना''
अच्छे कपड़े लाओं
पहिचानना
चोगा –पहिचान – दुष्टात्माओं से छुटकारा
अंगूठी – अधिकार – पवित्रात्मा से भर जाना
जूते – भेजना
छोटे का अधिकार वापस
चंगाई – अन्दरूनी और बाहरी

5. बदलाव: ''पवित्रात्मा के साथ रहना, मुझे भी अपने नौकरों के समान रख लो..... पिता के लिये काम करने के लिये राज़ी''

6. पुनः स्थापन ''खुले आप ग्रहण करना पद 23 पला हुआ बछड़ा लाकर मारों ताकि हम खाये और आनन्द मनाएँ''